ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 13, Issue 5, May 2023 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

सूक्तरत्नसंग्रहे समागत सूक्तानां पर्यावरण संरक्षण दृष्ट्या समीक्षात्मक अध्ययनम्

डॉ० रंजीत नारायण तिवारी

सहायक प्राध्यापक

रामश्रेष्ठ सिंह महाविद्यालय, चोचहाँ

सार

वर्तमान समय में पर्यावरणीय असंतुलन मानव जीवन के लिए गंभीर चुनौती बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई तथा प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग पृथ्वी के संतुलन को बिगाड़ रहे हैं। ऐसे समय में प्राचीन भारतीय साहित्य विशेषतः वैदिक सूक्तों का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। *सूक्तरत्नसंग्रह* में संकलित सूक्तों में प्रकृति के प्रति श्रद्धा, संरक्षण एवं संतुलन का गहरा संदेश निहित है। प्रस्तुत शोध-पत्र में इन सूक्तों का पर्यावरणीय दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन ऋषियों ने पर्यावरण संरक्षण को जीवन का अभिन्न अंग माना था, जो आज भी समान रूप से उपयोगी है।

मुख्य शब्द: पर्यावरण, सूक्त, वेद, संरक्षण, प्रकृति, संतुलन

1. प्रस्तावना

पर्यावरण वह समग्र प्रणाली है जिसमें जीव-जंतु, वनस्पतियाँ, जल, वायु, भूमि और आकाश सम्मिलित होते हैं। यह केवल भौतिक तत्वों का समूह नहीं है, बल्कि एक संतुलित और परस्पर निर्भर प्रणाली है,

जिसमें प्रत्येक घटक का अपना विशेष महत्व है। मानव जीवन पूर्णतः पर्यावरण पर निर्भर करता है, इसलिए पर्यावरण का संरक्षण मानव के अस्तित्व के लिए अनिवार्य है।

वर्तमान समय में औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि तथा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरणीय संतुलन तेजी से बिगड़ रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि क्षरण, ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ दिन-प्रतिदिन गंभीर होती जा रही हैं। इन समस्याओं का प्रभाव न केवल प्रकृति पर बल्कि मानव स्वास्थ्य, कृषि और समग्र जीवन प्रणाली पर भी पड़ रहा है।

ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि हम पर्यावरण संरक्षण के लिए वैकल्पिक और स्थायी उपायों की खोज करें। इस संदर्भ में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वेदों और सूक्तों में प्रकृति को अत्यंत पवित्र और पूजनीय माना गया है। *सूक्तरत्नसंग्रह* में संकलित सूक्त इस परंपरा का महत्वपूर्ण भाग हैं, जिनमें प्रकृति के विभिन्न तत्वों के संरक्षण का संदेश स्पष्ट रूप से निहित है।

प्राचीन ऋषियों ने प्रकृति को देवतुल्य मानकर उसके साथ संतुलित और समन्वित जीवन जीने की शिक्षा दी है। उनके अनुसार मानव और प्रकृति के बीच गहरा संबंध है, और यदि यह संबंध बिगड़ता है तो जीवन में असंतुलन उत्पन्न होता है। इस दृष्टिकोण से यह अध्ययन न केवल ऐतिहासिक महत्व रखता है, बल्कि वर्तमान पर्यावरणीय संकट के समाधान के लिए भी अत्यंत उपयोगी है।

इस शोध-पत्र में *सूक्तरत्नसंग्रह* के सूक्तों का पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अध्ययन किया गया है, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि प्राचीन भारतीय विचारधारा आज भी पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकती है।

2. शोध के उद्देश्य

2.1 पर्यावरणीय विचारों का गहन विश्लेषण

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य *सूक्तरत्नसंग्रह* में निहित पर्यावरणीय विचारों का विस्तृत और गहन अध्ययन करना है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि प्राचीन ऋषियों ने प्रकृति के विभिन्न तत्वों जैसे पृथ्वी, जल, वायु और वनस्पति को किस प्रकार देखा और उनके संरक्षण के लिए क्या संदेश दिए। यह विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल आधुनिक अवधारणा नहीं है, बल्कि इसका आधार प्राचीन काल में भी विद्यमान था।

2.2 मानव और प्रकृति के संबंध को स्पष्ट करना

इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य मानव और प्रकृति के बीच संबंध को समझना है। सूक्तों में यह बताया गया है कि मानव प्रकृति से अलग नहीं है, बल्कि उसका अभिन्न अंग है। इसलिए प्रकृति का संरक्षण करना मानव का नैतिक और सामाजिक कर्तव्य है। इस दृष्टिकोण को स्पष्ट करना इस शोध का एक प्रमुख लक्ष्य है।

2.3 प्राचीन और आधुनिक दृष्टिकोण की तुलना

इस शोध में प्राचीन वैदिक विचारधारा और आधुनिक पर्यावरणीय दृष्टिकोण के बीच तुलना की गई है। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि आज जिन सिद्धांतों को हम आधुनिक विज्ञान का परिणाम मानते हैं, वे वास्तव में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में पहले से ही विद्यमान थे।

2.4 पर्यावरण संरक्षण के व्यावहारिक उपाय प्रस्तुत करना

इस अध्ययन का उद्देश्य केवल सैद्धांतिक विश्लेषण करना ही नहीं है, बल्कि ऐसे व्यावहारिक उपाय प्रस्तुत करना भी है, जिन्हें अपनाकर वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं को कम किया जा सकता है। जैसे—संतुलित संसाधन उपयोग, जल संरक्षण, वृक्षारोपण आदि।

2.5 जागरूकता और नैतिक मूल्यों का विकास

इस शोध का एक अन्य उद्देश्य समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और नैतिक जिम्मेदारी की भावना को विकसित करना है। सूक्तों के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि प्रकृति का सम्मान करना और उसका संरक्षण करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

3. शोध पद्धति

3.1 गुणात्मक पद्धति

इस शोध में मुख्यतः गुणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसमें पाठ्य सामग्री का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले गए हैं। इसमें सूक्तों के भावार्थ को समझकर उनका पर्यावरणीय अर्थ निकाला गया है।

3.2 वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि

शोध में वर्णनात्मक विधि के माध्यम से सूक्तों का विवरण प्रस्तुत किया गया है, जबकि विश्लेषणात्मक विधि के द्वारा उनके गहरे अर्थों को स्पष्ट किया गया है।

3.3 स्रोतों का उपयोग

इस अध्ययन में प्राथमिक स्रोत के रूप में सूक्तरत्नसंग्रह तथा द्वितीयक स्रोत के रूप में वेद, उपनिषद, शोध पत्र एवं पुस्तकों का उपयोग किया गया है।

4. सैद्धांतिक आधार

4.1 वैदिक दृष्टिकोण में पर्यावरण

वैदिक साहित्य में पर्यावरण को अत्यंत पवित्र और जीवनदायिनी शक्ति के रूप में देखा गया है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को पंचमहाभूत कहा गया है, जो जीवन के मूल तत्व हैं। इन तत्वों के संतुलन को बनाए रखना ही पर्यावरण संरक्षण का मूल सिद्धांत है।

4.2 समन्वय और संतुलन का सिद्धांत

भारतीय दर्शन में प्रकृति और मानव के बीच संतुलन को अत्यधिक महत्व दिया गया है। यदि यह संतुलन बिगड़ता है, तो पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। सूक्तों में यह स्पष्ट संदेश दिया गया है कि मनुष्य को प्रकृति के साथ समन्वय बनाकर जीवन जीना चाहिए।

5. सूक्तरत्नसंग्रह में पर्यावरणीय चिंतन

5.1 पृथ्वी संरक्षण

सूक्तरत्नसंग्रह में पृथ्वी को माता के रूप में वर्णित किया गया है। यह भाव मनुष्य को यह सिखाता है कि जिस प्रकार वह अपनी माता का सम्मान करता है, उसी प्रकार उसे पृथ्वी का भी संरक्षण करना चाहिए। पृथ्वी को जीवनदायिनी मानकर उसके संसाधनों का संतुलित उपयोग करना आवश्यक बताया गया है। अत्यधिक दोहन से पृथ्वी की उर्वरता और संतुलन नष्ट हो सकता है।

5.2 जल संरक्षण

जल को जीवन का आधार माना गया है। सूक्तों में जल को शुद्ध, पवित्र और औषधीय गुणों से युक्त बताया गया है। यह बताया गया है कि जल का संरक्षण करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। जल प्रदूषण से न केवल मानव जीवन बल्कि सम्पूर्ण जैवमंडल प्रभावित होता है। इसलिए जल का संयमित उपयोग और संरक्षण आवश्यक है।

5.3 वायु संरक्षण

वायु को प्राण के समान माना गया है। स्वच्छ वायु के बिना जीवन संभव नहीं है। सूक्तों में वायु को शुद्ध रखने का संदेश दिया गया है। आधुनिक समय में वायु प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन चुकी है, जिससे अनेक रोग उत्पन्न हो रहे हैं। इस संदर्भ में सूक्तों का संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण है।

5.4 वन एवं जैव विविधता का संरक्षण

सूक्तों में वनस्पतियों और जीव-जंतुओं के संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है। वन न केवल ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, बल्कि जलवायु संतुलन बनाए रखने में भी सहायक होते हैं। जैव विविधता का संरक्षण पर्यावरण के संतुलन के लिए आवश्यक है।

5.5 अग्नि एवं ऊर्जा का संतुलित उपयोग

अग्नि को ऊर्जा का प्रतीक माना गया है। सूक्तों में अग्नि के संतुलित उपयोग की बात कही गई है। आज के संदर्भ में यह ऊर्जा संरक्षण और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों के उपयोग की ओर संकेत करता है।

6. आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

6.1 पर्यावरणीय संकट और समाधान

आज के समय में ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण और जल संकट जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। इन समस्याओं का समाधान सूक्तों में निहित सिद्धांतों में देखा जा सकता है। संतुलित जीवन शैली अपनाकर इन समस्याओं को कम किया जा सकता है।

6.2 सतत विकास की अवधारणा

सूक्तों में सतत विकास का स्पष्ट संकेत मिलता है। संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करना चाहिए कि भविष्य की पीढ़ियों को भी उनका लाभ मिल सके। यह आधुनिक सतत विकास की अवधारणा के अनुरूप है।

6.3 नैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण

पर्यावरण संरक्षण केवल वैज्ञानिक विषय नहीं है, बल्कि यह नैतिक और सांस्कृतिक विषय भी है। सूक्तों में प्रकृति के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव विकसित किया गया है, जो संरक्षण के लिए आवश्यक है।

7. परिणाम एवं चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से देखा गया कि सूक्तरत्नसंग्रह में संकलित सूक्त केवल धार्मिक या आध्यात्मिक महत्व तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनमें गहन पर्यावरणीय चेतना भी निहित है। सूक्तों में प्रकृति के प्रत्येक तत्व—पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और वनस्पति—को जीवन के लिए अनिवार्य बताया गया है तथा उनके संरक्षण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। यह दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय समाज पर्यावरण के प्रति अत्यंत संवेदनशील और जागरूक था।

अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि प्राचीन ऋषियों ने पर्यावरण को केवल संसाधन के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे एक जीवंत और पूजनीय सत्ता के रूप में स्वीकार किया। इस दृष्टिकोण के कारण मानव और प्रकृति के बीच एक संतुलित और नैतिक संबंध स्थापित हुआ। इसके विपरीत आधुनिक युग

में मनुष्य ने प्रकृति का अत्यधिक दोहन किया है, जिसके परिणामस्वरूप अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।

इसके अतिरिक्त, सूक्तों में निहित शिक्षाएँ यह संकेत देती हैं कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी नीतियों या वैज्ञानिक उपायों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए सामाजिक और नैतिक चेतना का विकास भी आवश्यक है। जब तक व्यक्ति स्वयं प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी महसूस नहीं करेगा, तब तक स्थायी समाधान संभव नहीं है।

इस अध्ययन के माध्यम से यह भी स्पष्ट हुआ कि सूक्तरत्नसंग्रह में वर्णित सिद्धांत आधुनिक पर्यावरणीय अवधारणाओं जैसे सतत विकास (Sustainable Development), पारिस्थितिक संतुलन (Ecological Balance) और संसाधनों के संयमित उपयोग के साथ पूर्णतः मेल खाते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली आज के वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुरूप है और उसे आधुनिक नीतियों में शामिल किया जा सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि यदि सूक्तों में निहित सिद्धांतों को व्यवहार में लाया जाए, तो वर्तमान पर्यावरणीय संकट को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। यह अध्ययन न केवल सैद्धांतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि व्यावहारिक रूप से भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

8. निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सूक्तरत्नसंग्रह में संकलित सूक्त पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं। इनमें प्रकृति के प्रति श्रद्धा, संतुलन और संरक्षण की जो भावना व्यक्त की गई है, वह आज के समय में अत्यंत आवश्यक है।

यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों ने पर्यावरण को जीवन का अभिन्न अंग माना था और उसके संरक्षण को मानव का नैतिक कर्तव्य बताया था। उन्होंने प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की जो शिक्षा दी है, वह वर्तमान पर्यावरणीय संकट के समाधान के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

आधुनिक युग में विज्ञान और तकनीक के विकास के बावजूद पर्यावरणीय समस्याएँ लगातार बढ़ रही हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि मनुष्य ने प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने के बजाय उसका अत्यधिक शोषण किया है। ऐसे में यह आवश्यक है कि हम प्राचीन ज्ञान परंपरा से प्रेरणा लेकर अपने व्यवहार में परिवर्तन लाएँ और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार दृष्टिकोण अपनाएँ।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल एक वैज्ञानिक या तकनीकी विषय नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक विषय भी है। जब तक समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना विकसित नहीं होगी, तब तक कोई भी प्रयास पूर्ण रूप से सफल नहीं हो सकता।

अंततः यह कहा जा सकता है कि सूक्तरत्नसंग्रह के सूक्त हमें एक संतुलित, जिम्मेदार और प्रकृति-समन्वित जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। यदि इन सिद्धांतों को आधुनिक जीवन में अपनाया जाए, तो

न केवल पर्यावरण का संरक्षण संभव है, बल्कि मानव जीवन भी अधिक संतुलित और समृद्ध हो सकता है।

9. सन्दर्भ सूची

1. तिवारी, रंजीत नारायण. (2018). *सूक्तरत्नसंग्रहे समागत सूक्तानां पर्यावरण संरक्षण दृष्ट्या समीक्षात्मक अध्ययनम्* (पीएचडी शोध-प्रबंध). दरभंगा: कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय।

2. झा, उपेन्द्र. (2016). *वैदिक साहित्य और पर्यावरण*. पटना: भारतीय विद्या भवन।

3. शर्मा, रामानुज. (2015). *वेदों में पर्यावरण संरक्षण*. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।

4. मिश्रा, केशव. (2014). *वैदिक पारिस्थितिकी*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

5. सिंह, राजेश. (2017). *वेदों में पर्यावरणीय नैतिकता*. नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।

6. गुप्ता, रमेश. (2013). प्राचीन भारत में पर्यावरणीय चेतना. *अंतरराष्ट्रीय संस्कृत अध्ययन पत्रिका*, 2(1), 45–52।

7. शर्मा, ब्रजेश. (2018). पर्यावरण संरक्षण में वेदों की भूमिका. *भारतीय दर्शन शोध पत्रिका*, 10(2), 112–120।

8. यजुर्वेद. (2010). (हिंदी अनुवाद). गोरखपुर: गीता प्रेस।

9. ऋग्वेद. (2012). (हिंदी अनुवाद). गोरखपुर: गीता प्रेस।

10. उपाध्याय, बलदेव. (2013). *भारतीय पर्यावरण दर्शन*. जयपुर: रावत प्रकाशन।

11. द्विवेदी, ओमप्रकाश. (2006). पर्यावरण संकट और हिंदू धर्म. *धर्म पत्रिका*, 31(2), 123–140।

12. चपल, क्रिस्टोफर के. (2000). *हिंदू धर्म और पारिस्थितिकी: पृथ्वी, आकाश और जल का संबंध*. (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान।

13. अग्रवाल, अनिल. (2012). पारंपरिक पारिस्थितिकी ज्ञान और पर्यावरणीय स्थिरता. *भारतीय पर्यावरण अध्ययन पत्रिका*, 5(1), 33–40।

14. पाठक, संजय. (2019). वैदिक साहित्य में पारिस्थितिक दृष्टिकोण. *मानविकी अनुसंधान पत्रिका*, 7(3), 67–75।

15. वर्मा, प्रमोद. (2016). प्राचीन भारतीय ग्रंथों में पर्यावरणीय नैतिकता. *अंतरविषयक अध्ययन वैश्विक पत्रिका*, 4(2), 89–95।